



१७. ब्लॉग लेखन



– प्रवीण बर्दापूरकर

लेखक परिचय : ब्लॉग लेखन के सफलतम लेखक प्रवीण बर्दापूरकर का जन्म ३ सितंबर १९५५ को गुलबर्गा में हुआ। मराठी पत्रकारिता में आपको सम्मान का स्थान प्राप्त है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों का गहराई से अध्ययन करने वाले तथा उन्हें समझने वाले निर्भीक पत्रकार के रूप में आप सुपरिचित हैं। आपने पत्रकारिता क्षेत्र में ब्लॉग लेखन को बहुत ही लोकप्रिय बनाया है। आपने अपने ब्लॉग द्वारा बदलते सामाजिक विषयों को परिभाषित करते हुए जनमानस की विचारधारा को नयी दिशा देने का प्रयास किया है। आपके ब्लॉग धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं। सीधी-सादी, रोचक और संप्रेषणीय मराठी और हिंदी भाषा आपके ब्लॉग की विशेषता है।

प्रमुख कृतियाँ : 'डायरी', 'नौदी डायरीनंतरच्या', 'दिवस असे की', 'आई', 'ग्रेस नावाचं गारूड' आदि।

आलेख : वर्तमान समय में आलेख लेखन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। समाचारपत्रों में छपने वाले विभिन्न आलेख विज्ञान, राजनीति, समसामयिक विषयों की विस्तृत, उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक जानकारी देते हैं। फलस्वरूप पाठकों एवं रचनाकारों में आलेख लेखन के प्रति पठन एवं लेखन का भाव जाग्रत हो गया है।

पाठ परिचय : आधुनिक समय में पत्रकारिता का क्षेत्र बड़ी तेजी से फैलता जा रहा है। समाचारपत्र हों अथवा टेलीविजन के समाचार चैनल हों... पत्रकारिता अछूती नहीं रही है। पत्रकारिता क्षेत्र में ब्लॉग लेखन का प्रचलन भी लोकप्रिय बनता जा रहा है। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने ब्लॉग लिखने के नियम, ब्लॉग का स्वरूप और उसके वैज्ञानिक पक्ष की चर्चा करते हुए उसके महत्व को स्पष्ट किया है। ब्लॉग लेखन जहाँ एक ओर सामाजिक जागरण का माध्यम बन चुका है; वहीं पत्रकारिता के जीवित तत्त्व के रूप में भी स्वीकृत हुआ है तथा बड़ा ही लोकप्रिय माध्यम बन चुका है।

ब्लॉग लेखन से तात्पर्य :

'ब्लॉग' अपना विचार, अपना मत व्यक्त करने का एक डिजिटल माध्यम है। ब्लॉग के माध्यम से हमें जो कहना है; उसके लिए किसी की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती। ब्लॉग लेखन में शब्दसंख्या का बंधन नहीं होता। अतः हम अपनी बात को विस्तार से रख सकते हैं। ब्लॉग, वेबसाइट, पोर्टल आदि डिजिटल माध्यम हैं। अखबार, पत्रिका या पुस्तक हाथ में लेकर पढ़ने की बजाय उसे कंप्यूटर, टैब या सेलफोन से परदे पर पढ़ना डिजिटल माध्यम कहलाता है। इस प्रकार का वाचन करने वाली पीढ़ी इंटरनेट के महाजाल के कारण निर्माण हुई है। इसके कारण लेखक और पत्रकार भी ग्लोबल हो गए हैं। नवीन वाचकों की संख्या मुद्रित माध्यम के वाचकों से बहुत अधिक है। इस वर्ग में युवा वर्ग अधिक संख्या में है। दुनिया की कोई भी जानकारी एक क्षण में ही परदे पर उपलब्ध हो जाती है।

ब्लॉग की खोज :

ब्लॉग की खोज के संदर्भ में निश्चित रूप से कोई डॉक्युमेंटेशन उपलब्ध नहीं है पर जो जानकारी उपलब्ध है



उसके अनुसार जस्टीन हॉल ने सन १९९४ में सबसे पहले इस शब्द का प्रयोग किया। जॉन बर्गर ने इसके लिए वेब्लॉग (Weblog) शब्द का प्रयोग किया था। माना जाता है कि सन १९९९ में पीटर मेरहोल्स ने 'ब्लॉग' शब्द को प्रस्थापित कर उसे व्यवहार में लाया। भारत में २००२ के बाद 'ब्लॉग लेखन' आरंभ हुआ और देखते-देखते यह माध्यम

लोकप्रिय हुआ तथा इसे अभिव्यक्ति के नये माध्यम के रूप में मान्यता भी प्राप्त हुई ।

ब्लॉग लेखन शुरू करने की प्रक्रिया :

यह एक टेक्निकल अर्थात् तकनीकी प्रक्रिया है । इसके लिए डोमेन (Domain) अर्थात् ब्लॉग के शीर्षक को रजिस्टर्ड कराना होता है । उसके बाद वह किसी सर्वर से जोड़ना पड़ता है । उसमें अपनी विषय सामग्री समाविष्ट कर हम इस माध्यम का उपयोग कर सकते हैं । इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी 'गूगल' पर उपलब्ध है । कुछ विशेषज्ञ इस संदर्भ में सशुल्क सेवाएँ देते हैं ।

ब्लॉग लेखक के लिए आवश्यक गुण :

ब्लॉग लेखक के पास लोगों से संवाद स्थापित करने के लिए बहुत-से विषय होने चाहिए । विपुल पठन, चिंतन तथा भाषा का समुचित ज्ञान होना आवश्यक है । भाषा सहज, प्रवाहमयी हो तो ही पाठक उसे पढ़ेगा । साथ ही लेखक के पास विषय से संबंधित संदर्भ, घटनाएँ और यादें हों तो ब्लॉग पठनीय होगा । जिस क्षेत्र या जिस विख्यात व्यक्ति के संदर्भ में आप लिख रहे हैं, उस व्यक्ति से आपका संबंध कैसे बना ? किसी विशेष भेंट के दौरान उस व्यक्ति ने आपको कैसे प्रभावित किया ? यदि वह व्यक्ति आपके निकटस्थ परिचितों में है तो उसकी सहृदयता, मानवता आदि से संबंधित कौन-सा पहलू आपकी स्मृतियों में रहा ? ऐसे अनेक विषय हैं जिन्हें आप शब्दांकित कर अपने पाठकों का विश्वास प्राप्त कर सकते हैं ।

यहाँ इस बात का ध्यान रहे कि विषय में आशय की गहराई हो । प्रवाही कथन शैली भी इसका एक महत्वपूर्ण मापदंड है । क्लिष्ट शब्दों के उपयोग से बचते हुए सीधी-सादी, सहज भाषा का प्रयोग किया जाए तो पाठक विषय सामग्री से बहुत जल्दी एकरूप हो जाता है । सटीक विशेषणों के प्रयोग से भाषा को सौष्ठव प्राप्त होता है और पाठक इसकी ओर आकर्षित होता है । भाषा शब्दों या अक्षरों का समूह नहीं होता है । प्रत्येक शब्द का विशिष्ट अर्थ के साथ जन्म होता है तथा उस अर्थ में भावनाएँ निहित होती हैं । सहज-सरल होने के साथ भाषा का बाँकपन ब्लॉग लेखन की गरिमा को बढ़ाता है । 'शैली' एक दिन में नहीं बनती । यह सतत लेखन से ही संभव है । जिस प्रकार गायक प्रतिदिन रियाज कर राग और बंदिश का निर्माण करने में निपुण बनता है, उसी प्रकार निरंतर लेखन से लेखक की

शैली विकसित होती है और पाठकों को प्रभावित करती है ।

ब्लॉग लेखन में आवश्यक सावधानियाँ :

ब्लॉग लेखन में इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि उसमें मानक भाषा का प्रयोग हो । व्याकरणिक अशुद्धियाँ ना हों ; लेखन की स्वतंत्रता से तात्पर्य कुछ भी लिखने का अनुमतिपत्र नहीं मिल जाता है । आक्रामकता का अर्थ गाली-गलौज अथवा अश्लील शब्दों का प्रयोग करना नहीं है । पाठक ऐसी भाषा को पसंद नहीं करते । किसी की निंदा करना, किसी पर गलत टिप्पणी करना, समाज में तनाव की स्थिति उत्पन्न करना आदि बातों से ब्लॉग लेखक को दूर रहना चाहिए । बिना सबूत के किसी पर कोई आरोप करना एक गंभीर अपराध है । ऐसा करने से पाठक आपकी कोई भी बात गंभीरता से नहीं पढ़ते और ब्लॉग की आयु अल्प हो जाती है । लेखन करते समय छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखा जाए तो पाठक ही हमारे ब्लॉग के प्रचारक बन जाते हैं । एक पाठक दूसरे से सिफारिश करता है, दूसरा तीसरे से और यह शृंखला बढ़ती चली जाती है ।

ब्लॉग लेखन का प्रसार :

ब्लॉग लेखक अपने ब्लॉग का प्रचार-प्रसार स्वयं कर सकता है । विज्ञापन, फेसबुक, वॉट्स ऐप, एसएमएस आदि द्वारा इसका प्रचार होता है । आकर्षक चित्रों-छायाचित्रों के साथ विषय सामग्री यदि रोचक हो तो पाठक ब्लॉग की प्रतीक्षा करता है और उसका नियमित पाठक बन जाता है ।

ब्लॉग लेखन से आर्थिक लाभ :

ब्लॉग लेखन से आर्थिक लाभ भी होता है । विशेष रूप से हिंदी और अंग्रेजी ब्लॉग लेखन का व्यापक पाठक वर्ग होने से इसमें अच्छी कमाई होती है । विद्यार्थी अपने अनुभव तथा विचार ब्लॉग लेखन द्वारा साझा कर सकते हैं । प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी जीवनशैली, अपना संघर्ष, अपनी सफलताएँ विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हो सकती हैं । राजनीतिक विषयों के लिए अच्छा प्रतिसाद मिलता है । इसके अतिरिक्त जीवनशैली तथा शिक्षा विषयक ब्लॉग पढ़ने वाला पाठक वर्ग भी विपुल मात्रा में है । यात्रा वर्णन, आत्मकथात्मक तथा अपने अनुभव विश्व से जुड़े जीवन की प्रेरणा देने वाले विषय भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं ।

— ० —

महात्मा गांधी – जीने की प्रेरणा देने वाला महामानव

महात्मा गांधीजी के संबंध में सोचता हूँ तो मुझे 'हाथी और सात अंधों की कहानी' याद आती है। जिस तरह उन सात अंधों को उनके स्पर्श से हाथी अलग-अलग रूप में अनुभव हुआ वही बात महात्मा गांधी के संदर्भ में होती है।

यह वर्ष महात्मा गांधी का १५० वाँ जयंती वर्ष है। आज भी हम गांधीजी, उनके विचार और कार्य को पूर्णतः समझ नहीं सके। किसी को उनका रहन-सहन, किसी को उनके विचार, किसी को उनका स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व, किसी को इस संग्राम में उनका अभूतपूर्व लोकसहभाग, अहिंसा और शांति के संदर्भ में उनके विचार, किसी को उनके भीतर बसा पत्रकार, किसी को उनके भीतर का अध्यात्मवादी रूप, किसी को गाँव की ओर चलने का उनका संदेश भाया तो किसी को खादी का समर्थन करने वाले, स्वयंपूर्ण ग्राम की संकल्पना प्रस्तुत करने वाले गांधीजी भाते हैं।

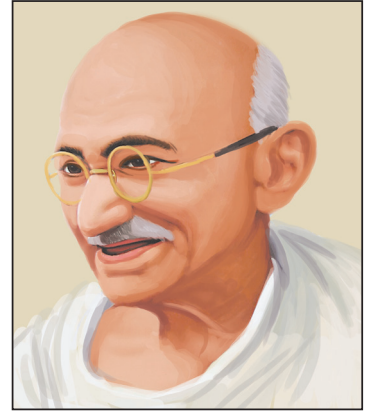
कोई उनकी निडरता से परिचित है तो किसी को उनका संगठक का रूप प्रभावित करता है। इतना ही नहीं; किसी को उनके व्यक्तित्व से समाजकार्य की प्रेरणा मिलती है तो कुछ उन्हें 'जीने की शिक्षा देने वाले शिक्षक' मानते हैं। अनेकों के लिए तो महात्मा गांधीजी जीने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन है। बहुत-से लोग उनके शोषणरहित समाज के विचार पसंद करते हैं।

व्यक्तिगत जीवन में मूल्यों के प्रति समर्पित होने वाले गांधीजी भी अनेक लोगों को प्रभावित करते हैं। कोई उनका 'विरोधियों को शस्त्र से नहीं, प्यार से जीता जा सकता है' वाला विचार पसंद करते हैं। संक्षेप में; महात्मा गांधी किसी एक की सोच में समा सकने वाला व्यक्तित्व नहीं है।

महात्मा गांधी नाम का एक विशाल वृक्ष है जो किसी एक व्यक्ति के आकलन के दायरे में समा नहीं सकता।

महात्मा गांधी का एक अन्य रूप भी है। सभी धर्मों तथा जातियों के बच्चों-बड़ों को, धनवानों-निर्धनों को, नगरीय तथा ग्रामीण सभी को महात्मा गांधी अपने लगते हैं। दिहाड़ी मजदूरी करने वाले अति निर्धन व्यक्ति को भी

गांधीजी अपने में से एक लगते हैं तथा वे महात्मा गांधी को पिता के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले आदरसूचक 'मेरे बापू' शब्द से संबोधित करते हैं। किसी मामूली फकीर की तरह जीवन जीने



वाले महात्मा गांधी के सम्मुख बड़े-से-बड़े धनवान भी शीश नवाते हैं। इसीलिए धनवान हो या निर्धन; सभी के लिए महात्मा गांधी वंदनीय हैं।

महात्मा गांधी का एकमात्र धर्म था 'मानवता'। वे पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष थे। राजनीति के संदर्भ में भी उनकी यही भूमिका थी। अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी मात्र भारत के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के लिए वंदनीय हैं। आज भी विश्व के कई देशों में गांधी जयंती के अवसर पर उनके जीवन दर्शन को याद किया जाता है।

उनके विचारों को हम प्रत्यक्ष में उतार नहीं सके। इसीलिए हमारे देश का प्रत्येक शहर नगरीय समस्याओं से ग्रस्त है। 'हरिजन' पत्रिका के माध्यम से महात्मा गांधी ने शोषणविरहित समाज का विचार प्रस्तुत करने के लिए आदर्श ग्राम की संकल्पना प्रस्तुत की। जुलाई १९४२ के 'हरिजन' अंक में महात्मा गांधी ने यही संकल्पना प्रस्तुत करते हुए 'गाँव की ओर चलो' का विचार लोगों के सम्मुख रखा। साथ ही उन्होंने 'गाँव को स्वयंपूर्ण होना चाहिए'; यह संदेश भी दिया। उनका कहना था कि गाँव के लोगों को अपनी आवश्यकताएँ स्वयं पूर्ण करने का प्रयत्न करना चाहिए। इतना ही नहीं; अपनी जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ एक-दूसरे को सहयोग भी करना चाहिए। इसके लिए वे सुझाव देते हैं कि कपास की फसल लेते हुए उससे सूत काते तथा स्वयं चरखा चलाते हुए कपड़ों की आवश्यकताओं को पूर्ण करें। महिलाओं से भी उनका

कहना था कि सूत कटाई कर कपड़े बनाएँ, गाँव के लोगों को बेचें और अर्थार्जन कर अपने पैरों पर खड़े रहें। गांधीजी के शिक्षा के संदर्भ में भी विचार महत्वपूर्ण रहे हैं। गाँव में प्राथमिक शिक्षा को भी उन्होंने अनिवार्य माना है।

वर्धा जिले के सेवाग्राम तथा अहमदाबाद की साबरमती नदी के किनारे बने आश्रम में महात्मा गांधी बहुत समय तक रहे। उस समय ये दोनों आश्रम शहरी क्षेत्र में नहीं थे। मिट्टी से जुड़ना गांधीजी को अपेक्षित था। आज भी असंख्य लोगों के लिए ये दोनों आश्रम मानवतावादी जीवन जीने के प्रेरणास्रोत हैं। जिस तरह महात्मा गांधी ने शांति और अहिंसा का समर्थन किया, उसी तरह वे निर्भय बने रहने के प्रति आग्रही थे। निर्भय होने का अर्थ स्वयंसिद्ध अथवा स्वयं तैयार रहना है। इस बात को बिना किसी भ्रांति-भ्रम के समझ लेना आवश्यक है। महात्मा गांधी का अहिंसा का मूलमंत्र विश्व को मोहित करने वाला सिद्ध हुआ है। आज भी संसार में कहीं हिंसा या क्रूरता की ज्वालाएँ धधक उठती हैं तो लोग महात्मा गांधी को याद करते हैं। आज भी उनका मानवता का दर्शन तथा मनुष्य के परस्पर द्वेष न करने के संदेश का स्मरण हो जाता है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करते हुए मैं लगभग २५ वर्ष नागपुर में रहा। नागपुर से डेढ़ घंटे की दूरी पर वर्धा जिला है। इसी जिले में महात्मा गांधी के चरणकमलों से पुनीत हुआ सेवाग्राम आश्रम है। साल भर में दो-तीन बार वहाँ जाकर पेड़ के नीचे एक-दो घंटे शांति से बैठकर पढ़ने में आनंद और प्रेरणा की अनुभूति मिलती है। यह मेरा अनुभव रहा है। विभिन्न सेवा प्रतियोगिता परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थी विविध विषयों पर संवाद स्थापित करने हेतु मेरे पास आते थे। उन युवाओं को लेकर मैं विविध विषयों पर चर्चा करने इस आश्रम में जाया करता। सेवाग्राम की जमीन, वहाँ की मिट्टी का प्रत्येक कण गांधीजी के पदस्पर्श से पुनीत हुआ है। इस पुण्यभूमि में होने वाली इन चर्चाओं को मानो गांधीजी सुन रहे हैं; इस भावना से हम अभिभूत हुआ करते थे।

पत्रकारिता के बहाने देश-विदेश में मेरा भ्रमण चलता रहा। किसी भी देश के विश्वविद्यालय या सामाजिक संस्था में जाता हूँ तो मैं अपना परिचय देते हुए यह कहता हूँ कि मैं महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे के सेवाग्राम तथा पवनार की भूमि से आया हूँ। ऐसा परिचय होने पर मेरा

स्वागत और आतिथ्य अत्यंत सम्मानपूर्वक हुआ। मैं जिन-जिन देशों में गया हूँ, हर जगह महात्मा गांधी के प्रति उनकी आत्मीयता तथा स्नेह मुझे प्रतीत हुआ।

जर्मनी की एक यात्रा के बीच अमानवीय अत्याचारों के जो यातनाघर हैं; उन्हें देखने का अनुभव आपको बताना चाहता हूँ। यहूदी (ज्यू) लोगों को जहाँ क्रूर और अमानवीय यातनाएँ दी गईं, वे यातनाघर उनकी यातनाओं के स्मारक हैं। उन यातनाघरों में दी गई यातनाओं और अत्याचारों की कहानियाँ क्रूरता की परिसीमा को भी लाँघ जाती हैं। उन यातनाघरों को देखते समय हम अंतर-बाह्य टूट जाते हैं। ऐसे ही एक यातनाघर को देखते समय हमारे आगे चलने वाली एक जर्मन महिला की आँखों में आँसू आ गए थे। जैसे उसके ही किसी रिश्तेदार को इन अत्याचारों का शिकार होना पड़ा था। चलते-चलते हमारे बीच की दूरी कम हो गई थी।

मैं अपने साथी के साथ हिंदी में वार्तालाप कर रहा था। उसे सुनकर उस महिला ने मुझसे पूछा—आप भारतीय हैं? मेरे ‘हाँ’ कहने पर वह कहने लगी, “इसका मतलब आप महात्मा गांधी के देश से आए हैं।” सेवाग्राम आश्रम का संदर्भ देते हुए मैंने कहा—“जी हाँ।” “सच?” आश्चर्यचकित होकर उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और गद्गद् होकर कहने लगी—“लगता है जैसे मैंने उस भूमि को स्पर्श कर लिया है।” इसके बाद हम आपस में बातचीत करते रहे। उसके दादा जी तथा माँ को उन अत्याचारों का शिकार होना पड़ा था। परिणामतः वह बचपन में ही बेघर, अनाथ हो गई थी। उस महिला ने महात्मा गांधी को पढ़ा था। लुई फिशर द्वारा लिखित गांधीजी की जीवनी उसके व्यक्तिगत पुस्तकालय में थी।

अंत में विदाई के दौरान उसने कहा, “आपके देश में महात्मा गांधी जैसे महामानव अवतीर्ण हुए इसलिए आपके माता-पिता ऐसी क्रूरता से बच गए।” उस समय गांधीजी के विचारों से अभिभूत वास्तविक मानवता के दर्शन हुए और महात्मा गांधी जैसे महामानव के सम्मुख मैं नतमस्तक हो गया। इसीलिए मैं लिखता हूँ और कहता भी हूँ कि मानवता के पुजारी महात्मा गांधी के भारत में जन्म लेने पर मुझे गर्व है।

— o —

पाठ पर आधारित

- (१) ब्लॉग लेखन से तात्पर्य ।
- (२) ब्लॉग प्रारंभ करने की प्रक्रिया ।
- (३) ब्लॉग लेखन में बरतनी जाने वाली सावधानियों पर प्रकाश डालिए ।

व्यावहारिक प्रयोग

- (१) अपने शहर की विशेषताओं पर ब्लॉग लेखन कीजिए ।
- (२) ग्रामीण समस्याओं पर ब्लॉग लेखन कीजिए ।

ब्लॉग निर्माण की प्रक्रिया

ब्लॉग तैयार करने के लिए google में Gmail account होना आवश्यक है ।

- ✿ Internet Explorer में www.blogger.com खोलिए / में जाइए ।
- ✿ CREATE YOUR BLOG पर क्लिक कीजिए ।
- ✿ अपने Gmail : google account पासवर्ड से लॉग इन कीजिए ।
- ✿ नये पेज पर title (शीर्षक) दीजिए और अपना blogger address तैयार कीजिए ।

उदा. vidya1234.blogspot.com थीम (theme) का चयन कीजिए । CREATE BLOG पर क्लिक कीजिए । आपका ब्लॉग तैयार होगा ।

ब्लॉग लेखन : आवश्यक सावधानियाँ

- ✿ ब्लॉग लेखन के विषय का चुनाव करते समय सूझ-बूझ का होना आवश्यक है ।
- ✿ ब्लॉग लेखन में सामाजिक संकेतों का पालन आवश्यक है ।
- ✿ ब्लॉग लेखन में सामाजिक स्वास्थ्य का विचार हो । वह समाज विघातक न हो ।
- ✿ ब्लॉग लेखन के लिए प्राप्त स्वतंत्रता का उचित उपयोग करना चाहिए ।